IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन

चंचल द्विवेदी
शोध छात्र, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
and
डॉ0 राकेश कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सार: शिक्षक, बालक और विषय। शिक्षण इन तीनों में स्थापित किया जाने वाला सम्बन्ध है। कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है।'' राष्ट्र निर्माण का यह पुनीत कार्य शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता पर निर्भर होता है किन्तु वर्तमान में शिक्षण की प्रभावशीलता प्रश्नांकित क्यों हो गयी है। वर्तमान में शिक्षण एक वेतनभोगी वृत्ति है जो पूव निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाता है इसी प्रकार मूल्यांकन के नियम भी पूर्व निर्धारित होते हैं। इस प्रकार शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता का आंकलन कठिन है। किसी शिक्षक के कौन से कारक का विद्यार्थियों की सफलता में क्या योगदान है उन्हीं में प्रमुख कारक शिक्षक का व्यक्तित्व है।एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान परिसम्पत्ति यदि कुछ है तो वह है विद्यालय एवं शिक्षक और शिक्षिकायें। राष्ट्र के निर्माण हेतु विद्यालय एक प्रयोगशाला है और शिक्षक इस प्रयोगशाला में ही अपने विद्यार्थियों को एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में तैयार करते हैं। अतः शिक्षकों के व्यक्तित्व का शिक्षण में विशेष महत्व है। विद्यालयों में शैक्षिक क्रियाकलापों को चलाना शिक्षकों का कार्य है। उपरोक्त दृष्टिकोण से शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का एक अध्ययन करने का निर्णय लिया। प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 490 माध्यमिक शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। मेरठ जनपद के समस्त विद्यालयों में से आवश्यकतानुसार विद्यालय का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। तदोपरान्त चयनित विद्यालयों में से 490 शिक्षक/शिक्षिकाओं पर परीक्षण को प्रशासित किया गया और आंकड़ों का संकलन किया गया। जिससे उनकी व्यक्तित्व आधारित योग्यता का वर्गीकरण किया गया। परिसूची के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उन शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है जो सक्रिय, उत्साहयुक्त, विनम्र भरोसेयुक्त गैर अवसादग्रस्त एवं भावनात्मक संतुलन युक्त व्यक्तित्व धारित करते हैं।

मुख्य शब्द: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, शिक्षण प्रभावशीलता, व्यक्तित्व

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का मूल आधार है। शिक्षा द्वारा मुनष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। उसको कौशल युक्त व उसके व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है। जगत् गुरू शंकराचार्य मानते हैं कि ''शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये'', **''सा विद्या या विमुक्तये''**। वहीं स्वामी विवेकानन्द जी लिखते हैं कि ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।'' जबकि हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार ''शिक्षा का अर्थ अन्तः शक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।'' उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि शिक्षा सौद्देश्यपूर्ण, सतत् रूप से चलने वाली एक प्रक्रिया है इस प्रकार मनुष्य को सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक शिक्षा द्वारा बनाया जाता है। जॉन एडम शिक्षा को द्विध्रुवीय

प्रक्रिया मानते हैं। एक प्रभावित होने वाला (शिक्षार्थी) और दूसरा प्रभावित करने वाला (अर्थात शिक्षक) जबकि जान डीवी के अनुसार शिक्षा त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है। उसी प्रकार रायबर्न के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया त्रिमुखी है। शिक्षा में तीन केन्द्र बिन्दु हैं– शिक्षक, बालक और विषय। शिक्षण इन तीनों में स्थापित किया जाने वाला सम्बन्ध है। **कोठारी आयोग** ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है।'' राष्ट्र निर्माण का यह पुनीत कार्य शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता पर निर्भर होता है किन्तु वर्तमान में शिक्षण की प्रभावशीलता प्रश्नांकित क्यों हो गयी है। वर्तमान में शिक्षण एक वेतनभोगी वृत्ति है जो पूव निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाता है इसी प्रकार मूल्यांकन के नियम भी पूर्व निर्धारित होते हैं। इस प्रकार शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता का आंकलन कठिन है। किसी शिक्षक के कौन से कारक का विद्यार्थियों की सफलता में क्या योगदान है उन्हीं में प्रमुख कारक शिक्षक का व्यक्तित्व है। किसी शिक्षक के व्यक्तित्व का अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास में कितना प्रभाव पड़ा। वर्तमान अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व का सकारात्मक प्रभाव पाया गया है।

शिक्षण शब्द शिक्षा से जुड़ा है शिक्षा का प्रयोग संकुचित एवं व्यापक दोनों रूपों में किया जाता है। संकुचित रूप में शिक्षण का अभिप्राय केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया से होता है जिसमें बालकों को कुछ निश्चित तथ्यों एवं सूचनाओं का ज्ञान कराया जाता है इस प्रकार की प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान प्रमुख माना जाता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक ज्ञान का स्रोत है। शिक्षक से ज्ञान प्रस्फुटित होकर शिक्षार्थी तक पहुँचाता है जिसमें बालक का स्थान एक निष्क्रिय स्रोता मात्र होता है। इस शिक्षा व्यवस्था को द्विध्रुवीय शिक्षण व्यवस्था कहा गया है। इस प्रकार के शिक्षण के बारे में मारसन लिखते हैं कि ''यह शिक्षण प्रक्रिया अधिक परिपक्व व्यक्ति (शिक्षक) तथा अपरिपक्व व्यक्ति (बालक) के मध्य प्रगाढ़ सम्बन्ध को दर्शाती है।'' परन्तु शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है अपितु उनका उद्देश्य बालक का सम्पूर्ण विकास करना है।

योकम तथा सिम्पसन के अनुसार ''अधिक सभ्य समाज में शिक्षण का अर्थ बालक में वर्तमान पर्यावरण में समायोजन करने की क्षमता उत्पन्न करने से ही नहीं है अपितु मानव जीवन की वर्तमान स्थितियों को उन्नत कर उसे अधिक समृद्धशाली बनाये जाने हेतु बालकों के चिन्तन और कर्म का प्रशिक्षण है।

इस प्रकार शिक्षण द्विध्रुवीय प्रक्रिया न मानकर इसे अब त्रिध्रुवीय व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षा के प्रमुख आधार शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम है जिनमें परस्पर सम्बन्ध माना गया है स्पष्ट रूप से कहें तो शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कि शिक्षक के माध्यम से विद्यार्थी को पाठ्यवस्तु को सीखने के लिए प्रेरित करती है।

इस प्रकार शिक्षण एक सौद्देश्य प्रक्रिया है इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु के मध्य परस्पर अन्तःक्रिया होती है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

बी0ओ0 स्मिथ– शिक्षण क्रियाओं का वह समूह है जोकि अधिगम को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित होता है।''

क्लार्क– छात्रों में परिवर्तन लाने के लिए प्रक्रिया के प्रारूप एवं परिचालन की व्यवस्था ही शिक्षण है।

एच0सी0 मारीसन– शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें अधिक विकसित व्यक्तित्व कम विकसित व्यक्तित्व के सम्पर्क में आता है और कम विकसित व्यक्तित्व की आगामी शिक्षा हेतु विकसित व्यक्तित्व व्यवस्था करता है।''

एच0सी0 मारीसन की परिभाषा से स्पष्ट है कि शिक्षकों की शिक्षण कला/विज्ञान पर शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है। इस प्रकार यह पाया जाता है कि विकसित व्यक्तित्व के शिक्षक प्रभावी शिक्षण हेतु सबसे प्रयुक्त होते हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व

एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान परिसम्पत्ति यदि कुछ है तो वह है विद्यालय एवं शिक्षक और शिक्षिकायें। राष्ट्र के निर्माण हेतु विद्यालय एक प्रयोगशाला है और शिक्षक इस प्रयोगशाला में ही अपने विद्यार्थियों को एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में तैयार करते हैं। अतः शिक्षकों के व्यक्तित्व का शिक्षण में विशेष महत्व है। विद्यालयों में शैक्षिक क्रियाकलापों को चलाना शिक्षकों का कार्य है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षकों का सर्वप्रथम कार्य यह है कि वह एक सन्तुलित व्यक्तित्व के धनी हों। अतः एक शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता तभी प्रभावी होगी। जब वह श्रेष्ठ व्यक्तित्व धारित करते हो।

समस्या कथन–

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव का एक अध्ययन।

तकनीकी शब्द

माध्यमिक स्तर के विद्यालय– माध्यमिक विद्यालयों से तात्पर्य माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित इण्टरमीडिएट तक के विद्यालयों से हैं।

शिक्षक एवं शिक्षिकायें– शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से तात्पर्य जो माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य करते हैं। सत्य यह है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में विद्यार्थियों पर प्रभाव डालने वाला शिक्षक के समान दूसरा कोई तत्व नहीं है।

व्यक्तित्व– व्यक्तित्व से तात्पर्य ''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्त प्रकृति, ज्ञान शक्ति तथा शरीर गठन का करीब–करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है''

इस प्रकार व्यक्तित्व का सीधा सम्बन्ध शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ता है तभी तो **पेन्टन का कथन** है– ''व्यक्तित्व का सम्बन्ध उन प्रभावों से है जो शिक्षक दूसरे व्यक्तियों पर उत्पन्न करता है।''

शिक्षण प्रभावशीलता– शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षकों के शिक्षण क्रियाकलापों को सुचारू एवं प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने से है।

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्माण किया गया है–

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के गतिविधि – निष्क्रियता आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर उत्साही आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के भावानात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें–

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के गतिविधि – निष्क्रियता आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर उत्साही आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।
3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।
4. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।
5. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।
6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के भावानात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

परिसीमाएं–

किसी भी शोध कार्य को निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए व शोध को सही स्वरूप प्रदान करने के लिए शोध सीमाओं का होना अति आवश्यक है। अतः शोधकर्ता की शोध परिसीमायें इस प्रकार है–

1. शोधकार्य उ0प्र0 के मेरठ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के कुल 490 शिक्षकों को शामिल किया गया है।
3. शोधकार्य केवल वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि तक सीमित है।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में मेरठ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त माध्यमिक शिक्षकों को लिखा गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 490 माध्यमिक शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। मेरठ जनपद के समस्त विद्यालयों में से आवश्यकतानुसार विद्यालय का चयन यादृच्दिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। तदोपरान्त चयनित विद्यालयों में से 490 शिक्षक/शिक्षिकाओं पर परीक्षण को प्रशासित किया गया और आंकड़ों का संकलन किया गया। जिससे उनकी व्यक्तित्व आधारित योग्यता का वर्गीकरण किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शिक्षण प्रभावशीलता मापनी– डॉ0 प्रमोद कुमार और डॉ0 डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित ''शिक्षण प्रभावशीलता मापनी'' का परीक्षण हेतु प्रयोग किया गया है।

व्यक्तित्व परिसूची– डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित डाइमेन्शन परसनल्टी इन्वेन्ट्री के द्वारा व्यक्तित्व मापन किया गया है। यह व्यक्तित्व सूची मानकीकृत उपकरण है।

सांख्यिकी विधियाँ–

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता द्वारा उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रतिगमन विश्लेषण आदि सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं व्याख्या–

शिक्षकों के व्यक्तित्व मापन के अध्ययन के लिए डाइमेन्सन ऑफ परसनैल्टी इन्वेन्ट्री का प्रयोग शोधकर्ता द्वारा किया गया है। इस परीक्षण द्वारा शिक्षकों के ट्रेट को 6 वर्गों में वर्गीकृत किया गया है–

प्रथम परिकल्पनाः माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के गतिविधि–निष्क्रियता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के गतिविधि आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के गतिविधि–निष्क्रियता आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.714007959
R Square	0.509807365
Adjusted R Square	0.508802872
Standard Error	56.71397986
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	1632448.146	1632448.146	507.5269936	1.42053E-77
Residual	488	1569640.05	3216.475512		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	102.3076638	8.132061355	12.58077864	1.2381E-31
व्यक्तित्व का सक्रियता–निष्क्रियता आयाम	12.28865495	0.545474907	22.52835976	1.42053E-77

तालिका–1 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शि{ाकों के व्यक्तित्व के गतिविधि – निष्क्रियता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.71 है जो उच्च सकारात्मक सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की गतिविधि बढ़ती जा रही है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

तालिका–1 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.50 है जो इंगित करता है कि 50 प्रतिशत स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित है।

तालिका–1 से यह भी ज्ञात होता है कि एफ का मान 507.52 है और एफ का सार्थक मान 0.00 है अर्थात सार्थकता p< 0.05 है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के गतिविधि–निष्क्रियता आयाम के बीच एक सार्थक संबंध है।

तालिका–1 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता p का मान < 0.05 है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने में विफल रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के गतिविधि–निष्क्रियता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सार्थक उच्च सकारात्मक सहसंबंध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे गतिविधि–निष्क्रियता आयाम स्कोर बढ़ता जा रहा है, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक सक्रिय होते जा रहे हैं और साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

चित्र–1 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की गतिविधि–निष्क्रियता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध को दर्शाता है।

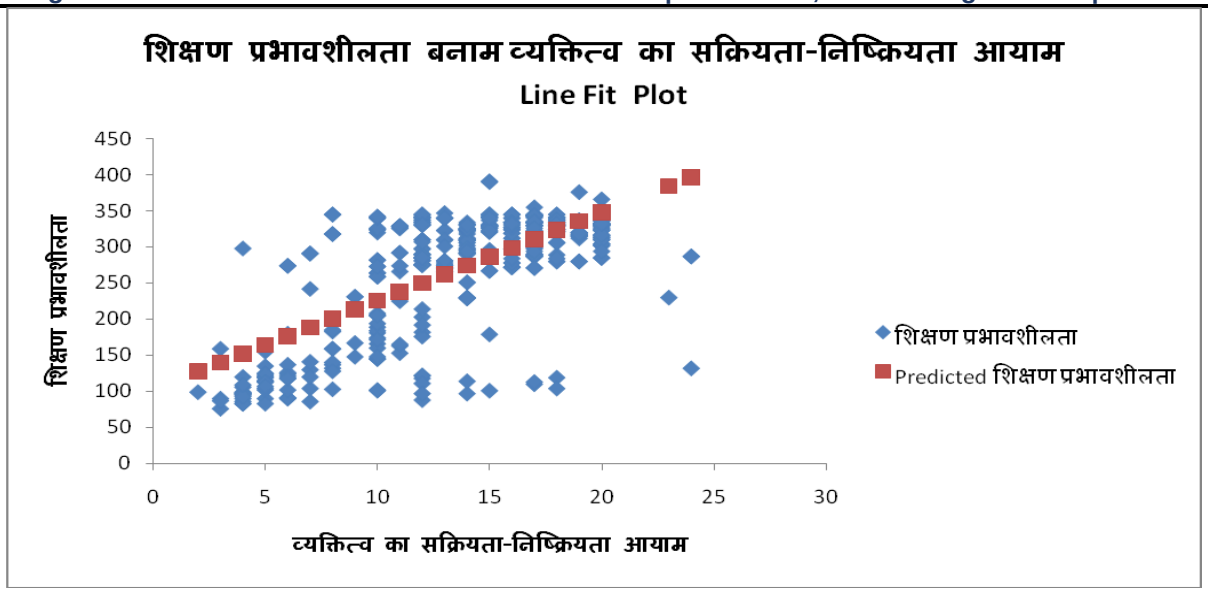

चित्र 1–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के गतिविधि– निष्क्रियता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

दूसरी शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

(H_0) 2–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.567311373
R Square	0.321842193
Adjusted R Square	0.320452526
Standard Error	66.70710858
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	1030567.089	1030567.09	231.5965236	4.43144E-43
Residual	488	2171521.107	4449.83833		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	155.8044398	8.464500811	18.4068078	7.53932E-58
व्यक्तित्व का उत्साही–गैर उत्साही आयाम	10.27950933	0.675470469	15.2182957	4.43144E-43

तालिका–2 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शि{ाकों के व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.56 है जो मध्यम सकारात्मक सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक उत्साही होते जा रहे है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

तालिका–2 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.32 है जो इंगित करता है कि 32 प्रतिशत स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित है।

तालिका–2 से यह भी ज्ञात होता है कि F का मान 231.59 है और F का सार्थक मान 0.00 है अर्थात सार्थकता $p<0.05$ है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम के बीच एक सार्थक सहसंबंध है।

तालिका–2 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता $p<0.05$ है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने में विफल रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सार्थक मध्यम सकारात्मक सहसंबंध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे उत्साही – गैर–उत्साही आयाम स्कोर बढ़ता जा रहा है, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक उत्साही होते जा रहे हैं और साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

चित्र–2 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की उत्साही – गैर–उत्साही आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध को दर्शाता है।

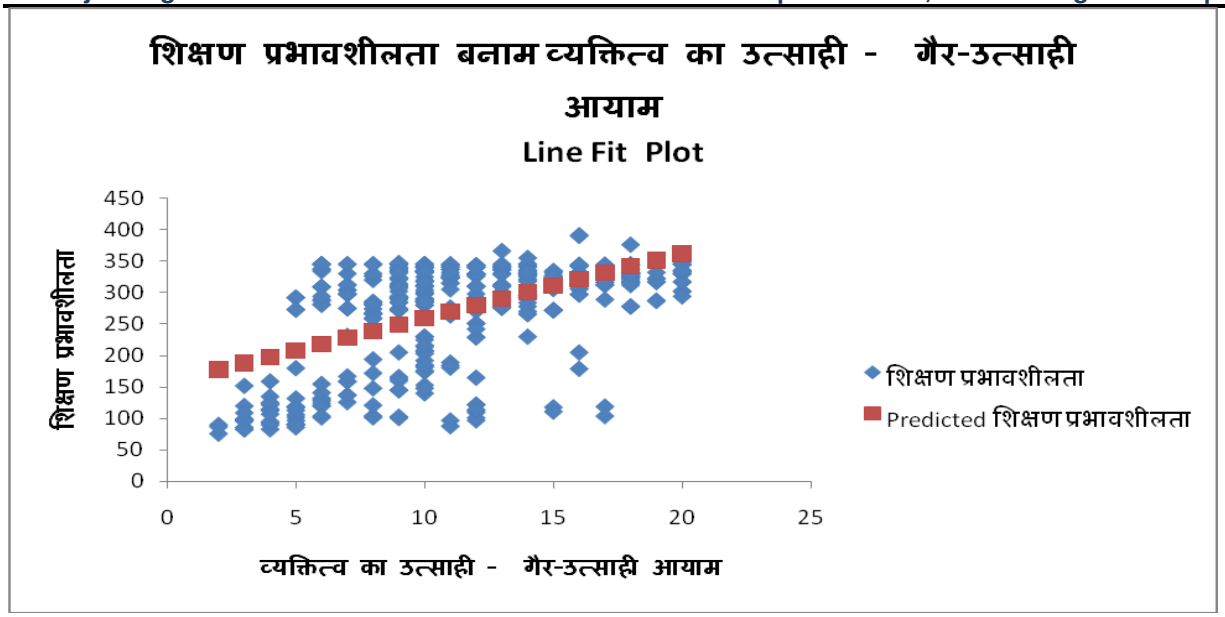

चित्र 2–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के उत्साही – गैर–उत्साही आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

तीसरी शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

(H_0) 3–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–3 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.312258325
R Square	0.097505261
Adjusted R Square	0.095655887
Standard Error	76.95362333
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	312220.4462	312220.4462	52.72337384	1.52632E-12
Residual	488	2889867.75	5921.860143		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	227.3898176	7.565387132	30.05660037	4.1978E-113
व्यक्तित्व का मुखर–विनम्र आयाम	5.700283584	0.785045566	7.261086272	1.52632E-12

तालिका–3 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.31 है जो निम्न सकारात्मक सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की मुखरता बढ़ती जा रही है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

तालिका–3 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.09 है जो इंगित करता है कि केवल 9 प्रतिशत स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित है।

तालिका–3 से यह भी ज्ञात होता है कि F का मान 52.72 है और F का सार्थक मान 0.00 है अर्थात सार्थकता $p< 0.05$ है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम के बीच एक सार्थक सहसंबंध है।

तालिका–3 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता $p<0.05$ है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने में विफल रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सार्थक निम्न सकारात्मक सहसंबंध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे मुखर – विनम्र आयाम स्कोर बढ़ता जा रहा है, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक मुखर होते जा रहे हैं और साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

निम्न चित्र–3 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की मुखर – विनम्र आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध को दर्शाता है।

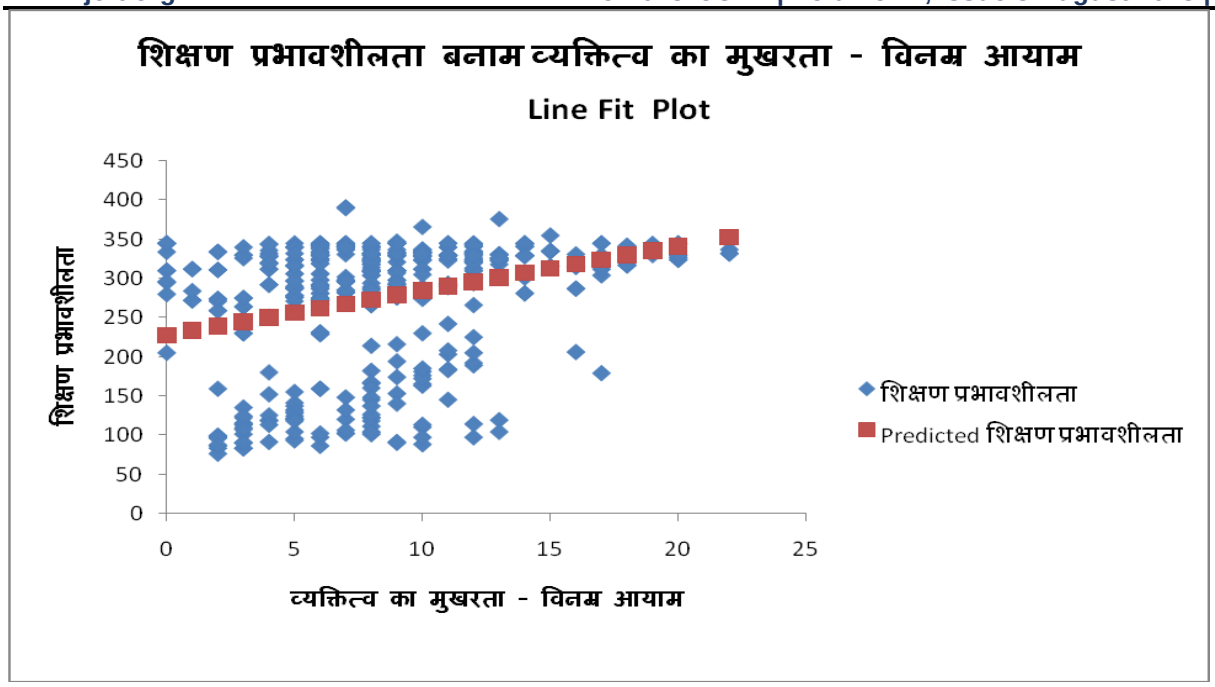

चित्र 3–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के मुखर – विनम्र आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

चौथी शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

(H_0) 4–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–4 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.033837791
R Square	0.001144996
Adjusted R Square	-0.000901838
Standard Error	80.9576622
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	3666.378505	3666.378505	0.559398607	0.454862925
Residual	488	3198421.817	6554.143068		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	279.5131055	5.765461948	48.48060884	1.0566E-188
व्यक्तित्व का संदेहास्पद–विश्वास आयाम	-0.541765067	0.724353074	0.747929547	0.454862925

तालिका–4 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शि{ाकों के व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम और उनकी शि{ा प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.03 है जो अति निम्न सकारात्मक या नगण्य सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम घटता या बढ़ता है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता लगभग अपरिवर्तनीय रहती है।

तालिका–4 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.00 है जो इंगित करता है कि अधिकांश स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित नहीं है।

तालिका–4 से यह भी ज्ञात होता है कि F का मान 0.55 है और F का सार्थक मान 0.45 है अर्थात सार्थकता p>0.05 है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम के बीच सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका–4 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता p>0.05 है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच सार्थक सहसंबंध नहीं है।

चित्र–4 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध को दर्शाता है।

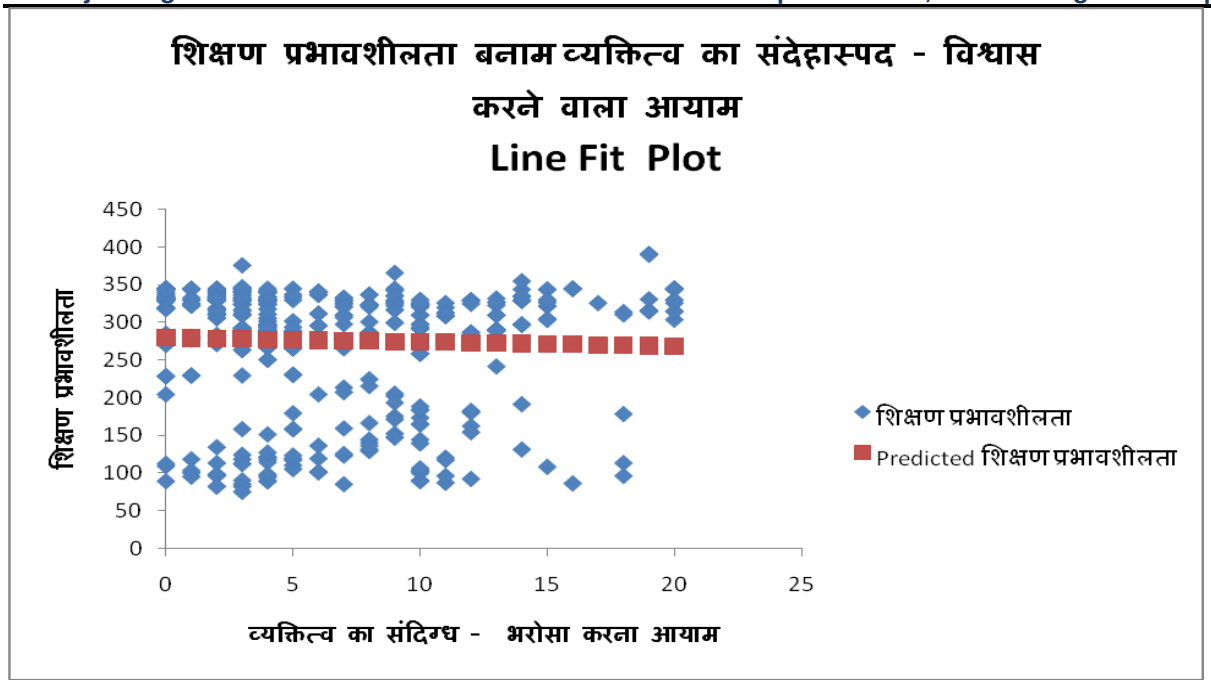

चित्र 4–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के संदेहास्पद – विश्वास करने वाला आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

चौथी शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

(H_0) 5– माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–5 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 5

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.395420764
R Square	0.15635758
Adjusted R Square	0.154628805
Standard Error	74.40222754
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	500670.762	500670.762	90.44412344	8.67845E-20
Residual	488	2701417.434	5535.691463		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	313.7576356	5.187522321	60.48313938	7.1137E-229
व्यक्तित्व का अवसादग्रस्तता– गैर–अवसादग्रस्तता	5.73264055	0.602787912	9.510211535	8.67845E-20

तालिका–5 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.39 है जो निम्न सकारात्मक सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अवसादग्रस्तता कम होती जा रही है और गैर–अवसादग्रस्तता बढ़ती जा रही है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

तालिका–5 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.15 है जो इंगित करता है कि केवल 15 प्रतिशत स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित है।

तालिका–5 से यह भी ज्ञात होता है कि F का मान 90.44 है और F का सार्थक मान 0.00 है अर्थात सार्थकता $p<0.05$ है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम के बीच एक सार्थक सहसंबंध है।

तालिका–5 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता p का मान <0.05 है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने में विफल रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सार्थक निम्न सकारात्मक सहसंबंध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम स्कोर बढ़ता जा रहा है, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक गैर–अवसादग्रस्तता होते जा रहे हैं और साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

चित्र–5 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध को दर्शाता है।

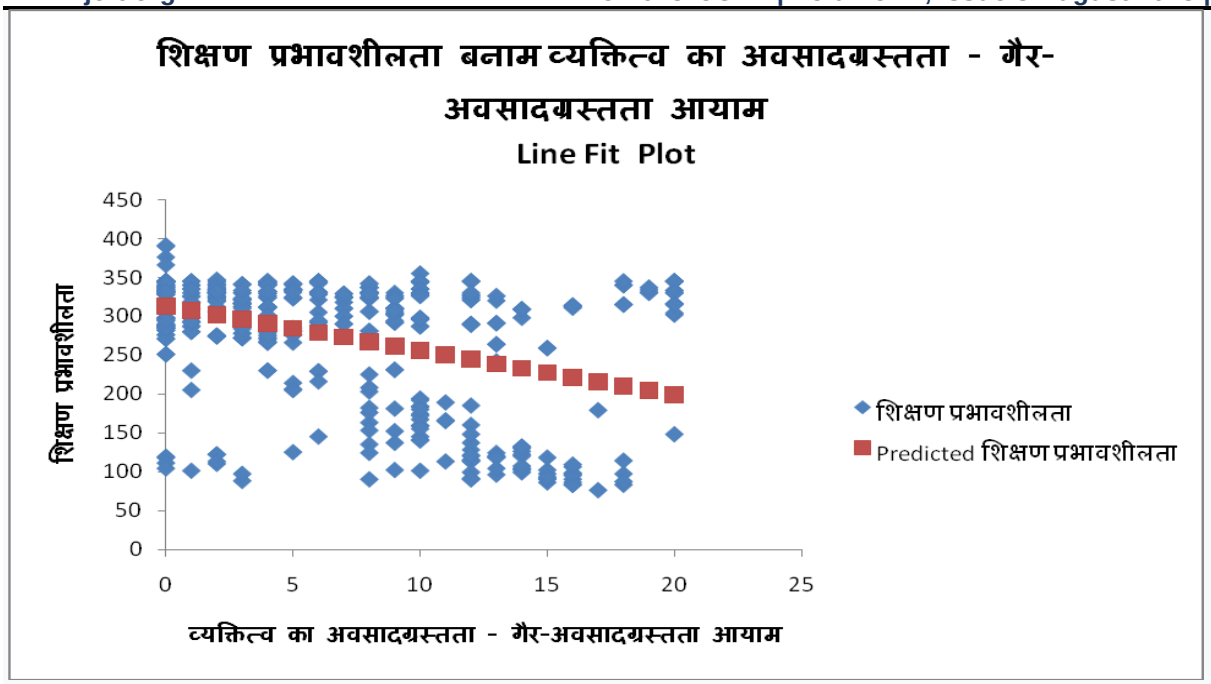

चित्र 5–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता – गैर–अवसादग्रस्तता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

छठी शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

(H_0) 6– माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता।

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उनके व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम के मध्य संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण तालिका–6 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 6

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम के प्रभाव का प्रतिगमन विश्लेषण

Regression Statistics	
Multiple R	0.276452127
R Square	0.076425779
Adjusted R Square	0.074533208
Standard Error	77.84713521
Observations	490

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	1	244722.0834	244722.0834	40.3820062	4.79608E-10
Residual	488	2957366.113	6060.17646		
Total	489	3202088.196			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value
Intercept	308.2352966	6.149300543	50.12526131	1.3602E-194
व्यक्तित्व का भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता	-4.015157292	0.631842184	-6.3546838	4.79608E-10

तालिका–6 से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.27 है जो निम्न सकारात्मक सहसंबंध है, इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक अस्थिरता कम होती जा रही है और भावनात्मक स्थिरता बढ़ती जा रही है, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

तालिका–6 से यह भी ज्ञात होता है कि R-Square का मान 0.07 है जो इंगित करता है कि केवल 7 प्रतिशत स्कोर ग्राफ की सबसे उपयुक्त रेखा पर स्थित है।

तालिका–6 से यह भी ज्ञात होता है कि F का मान 40.38 है और F का सार्थक मान 0.00 है अर्थात सार्थकता $p<0.05$ है। यह मान इंगित करता है कि प्रतिगमन मॉडल माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और उनके व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम के बीच एक सार्थक सहसंबंध है।

तालिका–6 से अंततः यह ज्ञात होता है कि सार्थकता $p<0.05$ है और इसलिए हम शून्य परिकल्पना को स्वीकार करने में विफल रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सार्थक निम्न सकारात्मक सहसंबंध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम स्कोर बढ़ता जा रहा है, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक भावनात्मक रूप से स्थिर होते जा रहे हैं और साथ ही उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

चित्र–6 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व की भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य निम्न सहसंबंध को दर्शाता है।

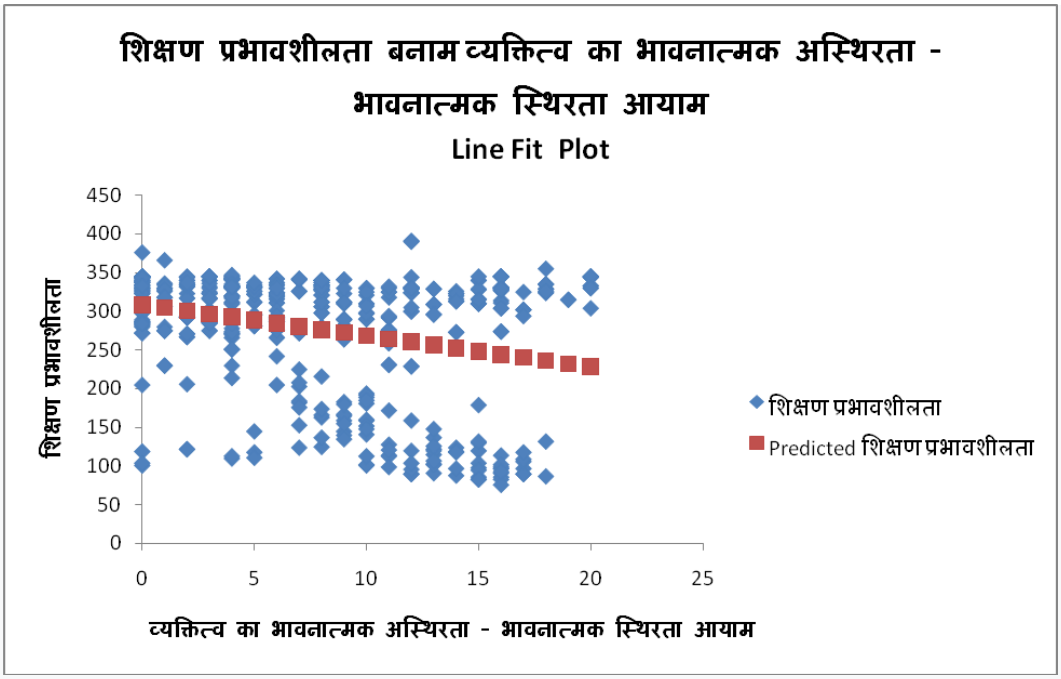

चित्र–6–माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यक्तित्व के भावनात्मक अस्थिरता – भावनात्मक स्थिरता आयाम और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसंबंध का चित्रमय प्रदर्शन

शोध के मुख्य निष्कर्ष–

उपरोक्त परिसूची के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उन शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है जो सक्रिय, उत्साहयुक्त, विनम्र भरोसेयुक्त गैर अवसादग्रस्त एवं भावनात्मक संतुलन युक्त व्यक्तित्व धारित करते हैं।

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से सहसम्बन्धित होती है।

2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के गतिविधि–निष्क्रियता आयाम के साथ उच्च सकारात्मक सह–सम्बन्ध है। अर्थात गतिविधि बढ़ने के साथ–साथ शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता बढ़ती जा रही है।

3. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के उत्साही–गैर उत्साही आयाम के मध्य सार्थक मध्यम सकारात्मक सह–सम्बन्ध है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अधिक उत्साही होते जा रहे हैं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

4. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के मुखर–विनम्र आयाम के मध्य निम्न सकारात्मक सह–सम्बन्ध है। अर्थात जैसे–जैसे माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक मुखर होते जा रहे हैं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

5. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के संदेहास्पद–विश्वास करने वाला आयाम के मध्य अति निम्न सकारात्मक सार्थक या नगण्य सह–सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि संदेहास्पद–विश्वास करने वाला आयाम का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर नगण्य प्रभाव होता है अर्थात शिक्षकों की शिक्षण

प्रभावशीलता लगभग परिवर्तनीय रहती है।

6. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके व्यक्तित्व के अवसादग्रस्तता–गैर अवसादग्रस्तता आयाम के मध्य निम्न सकारात्मक सह–सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक जैसे–जैसे अधिक अवसादग्रस्त होते जा रहे हैं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता भी बढ़ती जा रही है।

अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता उनके व्यक्तित्व पर निर्भर करती है।

सन्दर्भ सूची

- पाठक, पी0डी0– शिक्षण की प्रभावशीलता, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- कपिल, एच0के0– अनुसंधान विधियाँ, जनसंख्या, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- कौल, एल0– मैथेडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, विकास पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली।
- डिल्लन एवं कौर (2010) उनके मूल्य पैटर्न के सम्बन्ध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन, रीसेंट रिसोर्सेज इन एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी 15, 5 III IV
- जोशी और परिजा, पी0 (2000) पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ टीचिंग कम्पीटेन्सी, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक–2, जनवरी–जून 2000, खण्ड–19, पृष्ठ 57–62
- दक्षनामूर्ति (2010) शिक्षकों के व्यक्तित्व का प्रभाव, पेशे के प्रति दृष्टिकोण और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शिक्षण प्रभावशीलता, एडूट्रैक, खण्ड–9(9), 34, नीलकमल पब्लिकेशन प्रा0लि0, हैदराबाद।
- सिंह, अमरीक– ऑन बीइंग ए टीचर, कोर्णाक पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- गर्ग और इस्लम (2018) ''माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भावनात्मक खुपिया के सम्बन्ध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन'', इन्टरनेशनल जर्नल इन सोशल साइन्सेज, खण्ड–8 (5)।
- अकरम (2019) माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि के छात्रों के बीच सम्बन्ध बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, अगस्त 2019, खण्ड–41(2), पृष्ठ 93–108
- लाल, प्रो0 रमन बिहारी एवं जोशी, डॉ0 सुरेश चन्द्र– व्यक्तित्व
- कुहन, बी0जे0 (1982) टीचर परसनैलिटी टाइप एवं जॉब सैटिसफैक्शन, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल, खण्ड–43(1) पृष्ठ 104ए
- इन्दोरिया, नर्बदा (1983) शिक्षकों की प्रभावशीलता, समायोजन एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, एम0डी0एस0 विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान।
- पुरोहित, जगदीश नारायण, ब्यास हरिश्चन्द्र, शर्मा, डॉ0 मुरली मनोहर, शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।